Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

राही मासूम रजा के उपन्यासों में आर्थिक संवेदना

Hari Om*

M.Phil in Hindi (UGC Net) VPO - Madina, Rohtak, Haryana

सार – ***मानव-जीवन के प्रमुख अंगों में अर्थ आवश्यक एवं महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी व्यक्ति, समाज और देश की उन्नति आर्थिक सम्पन्नता पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में, अर्थ व्यष्टि-समष्टि एवं राष्ट्र की रीढ़ है। भारत एक विकसनशील राष्ट्र है। अतएव इसकी अपनी आर्थिक समस्याएं हैं, जिन्हें दृष्टि में रखते हुए राही जी ने अपने साहित्य में आर्थिक बिंदुओं को स्पर्श किया है। देश में गरीबी, बेकारी, अशिक्षा, दहेज, वेश्यावृत्ति जैसी समस्याएं व्याप्त हैं। डॉ. राही मासूम रजा ने इन समस्याओं का विवेचन अपने साहित्य में किया है।***

----------X----------

आधा गांव-उपन्यासकार डॉ. रजा ने 'बिभुक्षितःकिम् न करोति पापम्' इस उक्ति को ध्यान में रखते हुए 'आधा गांव' में एक कट्टर मुस्लिम वेश्या गुलाबीजान का चरित्रांकन किया है। समाज में व्याप्त वेश्यावृत्ति का प्रमुख कारण आर्थिक विपन्नता है। उन्होंने आलोच्य उपन्यास में लिखा है- "यह गुलाबीजान कट्टर मुसलमान थी। ठाकुर साहब के कमरे से जाकर वह फौरन नहाती थी और अल्लाहमियां से माफी मांगती थी कि पेट की वजह से उसे एक काफिर के साथ सोना पड़ता है।" इस प्रकार गरीबी देह-व्यापार को बढ़ावा देती है।

समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता की खाई ने मनुष्य के अधिकारों में काफी अन्तर ला दिया है। जो कार्य सम्पन्न वर्ग के लिए सहज सम्भव होता है, वही कार्य गरीबों के लिए कठिन है। भारतीय समाज की यह त्रासदी है कि यहां बहुसंख्यक जनता आर्थिक अभावों में जीवन-यापन करती है। उनकी दैनिक आवश्यकताएं भी पूर्ण नहीं हो पातीं। यह दयनीय स्थिति स्वंतत्रता के पूर्व से चली आ रही है। जमींदारी-प्रथा के अन्तर्गत मालगुजारी वसूल करना तथा जब युद्ध हो तो आम जनता को वारफंड देना कठिन होता था। इस बात की पुष्टि उपन्यासकार ने फुत्रनमियां के दरवाजे पर फंड मांगने जाते हैं तब फुत्रनमियां कहता हैं- "वार-फंड"--काहे का वार फंड! हम कहा रहा जर्मन से लड़े को? कि हम वार-फंड देदें कपड़ा हमें ना मिले। ए भाई, खाय की हर चीज हम्मे ना मिले। मिट्टी का तेल त आबे-जमजम हो गवा है। खास लोगन को मिलता है। हम एक डब्बल न देंगे वार-फंड में। जवुन करे का हो, तअुन कर लियो।"

फुत्रन मियां की लड़की रजिया की मौत का कारण उनकी आर्थिक स्थिति है। वह जमींदार परिवार में पैदा नहीं हुई। इसी कारण उसकी मौत पर ताबूत उठाने को कोई भी मुस्लिम जमींदार परिवार नहीं आता है। फुत्रनमियां को अपनी पुत्री की मृत्यु का दुःख होता है और उन्हें ऐसा एहसास होता है कि मरी हुई बेटी उनसे यह कह रही है कि ऐ बाबा, तुम मुझे अमीरों में बिठायो। मैं यह नहीं कहती। मुझे तो बस मरणोपरांत मेरी लाश को कब्र में दफनाकर आकाश में जगह बनाने दो। इस प्रसंग के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता की ओर संकेत किया है, जहां धन सम्पन्न-वर्ग गरीबों के प्रति पूर्णतया उपेक्षित और तिरस्कृत दृष्टिकोण रखता है।

आर्थिक विषमता मालिक और मजदूरों में संघर्ष उत्पन्न करती है। मिल-मालिक अपने स्वार्थ साधन हेतु मजदूरों का आर्थिक शोषण करते हैं, जिसे जाग्रत मजदूर वर्ग स्वीकार नहीं करता। डॉ. राही ने समाज के मिल-मालिक के प्रति मजदूरों के बदलते रवैये को सपाट बयानी अंदाज में प्रस्तुत किया है। जब सफिखा ने मिगदाद के यह कहने पर- "ओके कारखाने में काम करिहो अउर बेगार न करिहो।"

बेगार कइसी साहब। सकफरवा को जोश आ गया, खून-पानी एक करें हम मजूर लोग, अउर मौज उड़ाये मिल-मालिक।

इस प्रकार उपन्यासकार ने जनसाधारण में पनपती शोषण विरोधी स्थिति को सफ्रिवा के माध्यम से उद्घाटित किया है।

www.ignited.in

आर्थिक-समस्याएँ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में इतनी महत्वपूर्ण हो जाती हैं कि उसके सामने कोई धंम भी कोई अर्थ नहीं रखता। धर्म के नाम पर अगर रोजी - रोटी का प्रबंध होता तो मनुष्य सहज में सब कुछ छोड़ने पर आमादा हो जाए। आर्थिक प्रलोभन देकर राजनेताओं ने हिन्दुस्तान - पाकिस्तान के बँटवारे को बढ़ावा दिवा और अपने सत्ता सँभालने के लिए भोली-भाली जनता को हिन्दू-मुस्लिम भेद भाव की नीति समझाकर देश को दो भागों में विभाजित किया। इस विभाजन में बेरोजगार नौजवान को पकिस्तान जाने के लिए आर्थिक लालच देकर उकसाया गया। प्ररन्तु जो नौजवान पाकिस्तान चले गये, वे वहाँ आर्थिक दृष्टि से उपेक्षित ही रहे। जो स्वप्न उन्हे दिखाए गये थे। वे स्वप्न बनकर ही रह गये। यही कारण हैं कि जब सधन पाकिस्तान से हिन्दुस्तान अपने माँ-बाप से मिलने आता है, तब बूढ़ी आँखे, उन सन स्वप्नों को याद करती हैं जो पाकिस्तान जाने के लिए दिखाए गये थे। सधन को देखकर उसके माता-पिता इस बात से अवगत हो जाते हैं कि पाकिस्तान में भी युवक-वर्ग आर्थिक - दृष्टि से उपेक्षित ही हैं। इसी प्रकार जब फुत्रनमियाँ इस्लामी से चल रहे पाकिस्तान की स्थिति को जानना चाहते हैं, तब सधन कहता है-"इस्लाम का मतलब है दादा, कि मुसलमानों को नौकरी मिले।"

"अच्छा, ई हमपें ना मालूम रहा कि रसूलल्लाह मार एही पर ऊधम जोते रहे कि मुसलमानों को नौकरी मिले। आज तू हमरी बढ़ी परेशानी दूर कर दियो। मौलवी बेदार बहुते नाक में दम किए रहे थे। हकीमों को ई बात समझा दो बेटा।"

जमींदारी-उन्मूलन ने गंगौली के शिया मुसलमानों के आर्थिक व्यवहार पर कहर ढाया। एकाएक ऐसा एहसास होने लगा कि जैसे वे अपने घर में हि बेघर हो गये हैं। जमींदार उन्मूलन ने इनकी रियासतों की नीवं ही हिला दी। देश-विदेश से अधिक उन्हें जमींदारी समापन का दुःख हुआ क्योकि उनकी आन-बान-शान में तो कमीं आई ही, साथ ही आर्थिक स्थिति पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। इस स्थिति के संबंध में डॉ. राही लिखते हैं- "पूरा देश ऐक नये प्रकार के सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन से गुजर रहा था, लेकिन गंगौली के जमींदारों के लिए पाकिस्तान बनना या न बनना बेमानी था, लेकिन जमींदारी खात्मे ने इनकी शख्सियतों की बुनियादें हिला दीं।" स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् राजनीतिक परिवेश ने देश के आर्थिक समीकरण को ही बदल डाला। कल तक, निम्न जाति के लोग जमींदारों के सामने जमीन पर बैठते थे, आज बराबरी में समाजमें प्रतिष्ठित होने लगे। अत: उपन्यासकार ने गंगौली में कृषक और सामान्य कर्मचारी मे मध्य राजनीतिक दाँव-पेंच से एक ऐसा वर्ग उभरा जिसने गुटबंदी को जन्म दिया। फुत्रनमियाँ इस दलबंदी में शामिल हो जाते हैं और अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए यह मानते हैं कि-"अब गाँव में रहे वास्ते ई जरूरी है कि आदमी के पीछे सौ-पचास लाठी रहे एह मारे कि लठिया पीछे ना रहिये न आगे आ जैहैं और दनादन पड़े लगिहैं खोपड़ी पर। इस प्रकार गंगौली में शक्ति जमींदारो से हटकर एक खास वर्ग में सीमित हो गयी और अब वे वही करने लगे जो कभी जमींदार किया करते थे। परिणम-स्वरूप जमींदार किया करते थे। परिणाम - स्वरूप जमींदार की समप्ति शिया मुस्लिम परिवारों में उदासी एवं तनहाई का कारण बन गई। इस स्थिति की समीक्षा करते हुए डॉ. जगदीश नारायण श्रीवास्तव लिखते हैं-"जमींदारी खत्म होना, पाकिस्तान बन जाना, जवान लड़को का अपनी बीवियों ओर बच्चों को, बूढे बाप-दादों के कंधो पर छोड़कर कैरियर बनाने के लिए पाकिस्तान चला जाना उनकी तनहाई के प्रमुख कारण हैं।"

हिम्मत जौनपुरी:-

'हिम्मत जौनपुरी' में गाजीपुर में गंजर - बसर कर रहे निम्न वर्ग के लोगों का यथार्थ चित्रण हुआ है। समय के बदलते परिवेश में लोगों को अपने व्यवसायों को भी बदलना पड़ा। गाँव के ताँगिवालों से रिक्शा वालों के प्रतिस्पर्धा करना कठिन हो गया है- "रिक्शे की संख्या बड़ती जा रही है, क्योंकि घोड़ों की तरह आदमी को रोज पाँच सेर चने की जरूरत नहीं पड़ती । पाँच सेर चना हो तो एक परिवार दो दिन खाना खा ले। आदमी के लिए यही टॉनिक काफी हैं। इस ख्याल की फंकी मारकर और ऊपर से पेटभर पानी पीकर वह इस हवा से बातें करने लगता है कि सवारी को मजा आ जाता है।"

उपन्यासकार ने बम्बई महानगरी की ताम-झाम, जिसमें विशेष रूप से फिल्मी -जगत के उस महोल्ले से विचित्र किया है, जहाँ पर प्रतिभा की एपेक्षा होती है और जहाँ व्यक्ति का मूल्यांकन उसके आर्किक स्तर पर किया जाता हैं "यहाँ दाम एक्टर या म्यूजिक डायरेटर या कथाकार का नहीं लगता। यहाँ दाम उसकी गाड़ी का लगता है प्रेम जूतियाँ चटखाते-चटखाते आये थे। जूतियाँ चटखाते लौट गये। गुलशन नंदा के पास अस्सी हजान का नया फलैट है। जोश को किसी ने घास न डाली। हसरत की तूती बोल रही है। यहाँ अक्ल न हो किसी के पास तो फर्क नहीं पडता परन्तु कार न हो तो फर्क पड़ता है।"

इस प्रकार आर्थिक सम्पन्नता के आधार पर व्यक्ति की पहचान होती है। इस फिल्मी जगत में प्रतिभा का काई महत्व

www.ignited.in

नहीं है। यदि कलाकार आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त कर लेता है तो वही सबसे प्रतिभावान और श्रेष्ठ कलाकार है।

आर्थिक स्थिति के आधार पर समाज में दो वर्ग बने-एक धन सम्पन्न वर्ग एवं दूसरा अभावग्रस्त वर्ग एवं दूसरा अभावग्रस्त वर्ग। इस आर्थिक-विषमता ने मनुष्य के जिवन को ही नहीं, उसकी मौत को भि वर्ग किशेष के साथ जोड़ दिया है। इसलिए अब व्यक्ति नहीं मरता है अमीर या गरीब व्यक्ति। जैसा कि राही जी ने लिखा है-"कोई भी बड़ा आदमी मरता है तो जो अच्छाइयाँ उनमें नहीं होती हैं, वह भी ढूँढ ली जाती हैं कि मरने वाला हमेशा शरीफ आदमी होता हैं, और यदि कोई साधारण आदमी मरता है तो कोई यह सोचने का कष्ट भी नहीं उठाता कि उस एकेले आदमी के साथ किमनी चीजें मर गई।"

देश-विभाजन से उत्पन्न आर्थिक त्रासदी का चित्रण भी 'ओस की बूँद' उपन्यास में हुआ है। वस्तुतः धर्म के आधार पर नौकरी-प्राप्ति में भेदभाव नहीं होना चाहिए। समान कार्य के लिए समान वेतन यही सूत्र न्यायपूर्ण होता है। स्कूल मास्टर पंडित गोबरधन की तनख्वाह बढाये जाने के प्रस्ताव पर वजीरहसन विरोध करता है। वह प्रश्न पूछता है प्रिंसिपल अलीमंजी और दूसरे मास्टरों की तनख्वाह क्या इसलिए नहीं बढ़ाई जा रही है कि वे मुसलमान हैं? वह क्षुब्ध होकर कहता है कि - "अब वह स्कूल नहीं रह गया है, ये कोठा है, जहाँ हम वेश्याओं के समान पेशा कर रहे हैं," इस प्रसग के माध्यम से हिन्दू-मुस्लिम को संकुचित विचारधारा के कारण किसी व्यक्ति पर होने वाले आर्थिक अन्याय की अभिव्यंजना हुई है।

विवेच्य-उपन्यास में रामवतार का व्यक्तित्व चित्रित हुआ है। वे धार्मिक स्वभाव के हैं। घर के सभी सदस्य उनका मजाक उड़ाते हैं, क्योंकि वे अपने व्यवसाय को भी धार्मिक नीति-नियमों से चलाते। उन्हें वस्तुएँ दबाकर दाम बढाने की कला नहीं आती। रामवतार की व्यावसायिक असफलता के सम्बध में डॉ. राही का वक्तव्य है कि -"उसे अपने राम ही को रखने की जगह नहीं मिलती थी तो बिल्कुल खाली हो गया, हर वक्त तूलसी या सूर को गुनगुनाया करता था। परन्तु तुलसी या सूर उसकी पत्नी की साड़ी या चमड़ियाँ या करधनी तो नहीं बन सकते थे न! जेठानी जो पहना देती उसे पहनना पड़ता। वह पहन भी लेती। कभी शिकायत भी न करती। परन्तु दिन-ब-दिन कुढ़न में एक रात वह मर गई।"

दहेज, समाज के लिए अभिशाप हैं। भारत में कैंसर की तरह व्याप्त दहेज प्रथा किन्दू और मुस्लिम दोनों को प्रभावित करती हैं। 'दिल एक सादा कागज' में दहेज रूपी अग्नि की इसी ज्वाला में जलते हुए जन्नत नामक मुस्लिम लड़की की व्यथा-कथा है। आर्थिक विपन्नता के कारण जन्नत का बेमेल विवाह होता हैं। - "लड़का, माशाल्लाह से, पी॰ डब्लू॰डी॰ में इंजीनियर था। घर में हुन बरस रहा था। उम्र जरा ज्यादा थी।, तो उम्र क्या होती है। लड़के की उम्र नहीं देखी जाती। कमाई देखी जाती है।"

यह एक कटु परन्तु वास्तविक तथ्य है कि देश आज भले ही भौतिक दृष्टि से उन्नति कर रहा हो, परन्तु यहाँ दरिद्रता अभी भी अपनी चरत सीमा पर है। वस्तुतः देश की राष्ट्रीय समस्या भूख है। दिन - प्रतिदिन समाचार पत्रों में माँ द्वारा भूख से पीड़ित बच्चों के साथ आत्महत्या के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं। निश्चित ही यह देश के लिए चिन्ता का नहीं वर्न चिन्तन का विषय है। समाज के प्रति प्रतिबद्ध राही जी इस भयावह स्थिति का चित्रण करते है। मुनीस एक कलाकार है। वह एक चित्र बनाता है और कहता है-"मैं शरीफ लोगों की तस्वीरें नही बनाता। इस औरत को देखिए। यह एक माँ है। तीन-चार बरस पहले इस पर अपने तीन छोटे-छोटे बच्चों के कत्ल का केस चला था। इसने भरी अदालत में कहा था, हाँ, मैंने अपने बच्चों को मार डाला क्योकि मुझसे उनका भूखों मरना नहीं देखा जा रहा था। यह बात अदालत की समझ में नहीं आएगी, क्योंकि अदालत ने उन बच्चों को जन्म नहीं दिया था।उसे उम्रकैद की सजा मिली क्योंकि अदालत दिल की बात नहीं मानती सिर्फ गवाहों की बात मानती है।"

आलोच्य-उपन्यास में एक फिल्मी कहानी चलती है जो कि हमारे समाज - जीवन से जुडी हुई है। इसके अन्तर्गत अपराधी वर्ग अपना संगटन बनाने के संबंध में सोचते हैं और शिकायत करते है। रूपये का मूल्य घटता जा रहा है। जिस चीज के लिए कल एक जेब काटनी पड़ती थी आज उसी चीज के लिए लगभग दस जेबें काटनी पड़ती हैं। 50 प्रतिशत जेबें खाली होती है, यही कारण है कि हमारे धन्धों का विकास असम्भव हो गया है। सरकार हमें नये औजार खरीदने के लिए न कर्ज देती है न इम्पोर्ट लाइसेंस। लोग जीवन में साम्प्रदायिकता का जहर घोलकर एम॰पी॰हो जाते हैं हमें यह भी हक नहीं कि हम दूध में पानी मिलाकर बेच सकें। इसलिए हम मांग करते हैं कि केन्द्रीय मंत्रिमंडल में एक हमारा मंत्री भी शामिल किया जाय।" यह प्रसंग जितना हस्यास्पद है उतना ही चिन्तनीय भी है। मनुष्य के जीवन में भावनाओं का महत्व अवश्य होता है। परन्तु भावना से भूख की तृप्ति नहीं होती। यह सच्चाई बागी आजमी के परिवार के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है- मंहगाई के साथ जिवन की मीठास कम होने लगी। यह बात नहीं थी कि दोनों को एक-दसरे से प्यार न रह गया हो या प्यार कम हो गया हो पर जरूरतों तो होती हैं और यदि पति जरूरतें भी पूरी न कर सके तो उसके होने का फायदा क्या?"

टोपी शुक्लाः-

सम्प्रति, मानव-जिवन आदर्श से अधिक व्यावहारिक पक्ष की ओर उन्मुख हो रहा है समाज में ऐसी विकट समस्या आ गई है कि वैवाहिक संबंधों को भी पैसों के आधार पर तौला जाने लगा है। विवाह तय करते समय वर का वेतन देखा जाता है, गुणवता नहीं। टोपी शुक्ला अपने मित्र इफन से कहता ह।-"इश्क का ताल्लूक दिलों से होता है और शादी का तनख्वाह होगी वैसी ही बीवी मिलेगी।" आज हमारे देश और समाज में अर्थ का महत्व अधिक है। पैसों के हाथों बिके हुए लोगों का प्रमुख उदेश्य मात्र पैसा प्राप्त करना है, चाहे उसके लिए उन्हें भारी कीमत भी क्यों न चुकाना पड़े। मुन्नीबाबू का विवाह एक ऐसी लड़की से होता है जो न तो रूपरुग में है और न ही गुण में। वकील की हैसियत से पंडित सुधाकर लाल की इकलौती बेटी है। वकील की हैसियत से पंडित सुधार दस-बारह हजार कमाते थे। जमींदार परिवार था। कई कल-कारखानों के हिस्सेदार थे और पंडित जी के घर में अनाज की तरह नोटों को धूप दिखलाई जाती है। बाप - दादों ने डेढ़ सौ दुकानें और पाँच हवेलियों के अलावा सतरह लाख का बैंक बैलेंस छोड़ा था जिसके कारण डॉ. भृगुनारायण ने अपने पुत्र का विवाह पंडित सुधार की पुत्री से कर दिया था।

अति भौतिकवादी दृष्टिकोण ने भावनाओं की उपेक्षा कर दी है। मानवीय मूल्य, प्रेम, दया, सहानुभूति, संवेदना, विश्वास आदि मूल्य, प्रेम, दया, सहानुभूति, संवेदना, विश्वास आदि मूल्यहीन हो गये हैं। धन सर्वोपरि है। 'ढाई आखर' प्रेम को भी पैसे के तराजू पर तौला जा रहा हैं।- "प्यार अ बतनख्वा हके गज से नापा जाता है और सोशल पोजीशन की तराजू में तौला जाता है।"..."पहले दिलों के बीच में बादशाह आया करते थें, अब नौकरी आती है। हर चीज की तरह मोहब्बत भी घटीया हो गई है।"

'सीन 75' में क्लर्को के जीवन का चित्रण हुआ है। इस वर्ग की विवशता यह है कि यह उधारी पर जीवन का चित्रण हुआ है। इस वर्ग की विवशता यह है कि यह उधारी पर जीवन-यापन करता है। भोलापन चोपड़ा 'सी-ग्रेड' क्लर्क थे। एक प्राइवेट कंपनी में बिल-कलेक्टर थे। उन्हें केवल एक सौ बानवे रूपये तनख्वाह थी। परन्तु उनकी पत्नी रमा ने झूठी शान दिखाने के लिए उनका वेतन एक हजार बानवे रूपये बता रखा था-"नयी-नयी शादी हुई थी, इसलिए रमा के पास कुछ पैसे थे। रमा ने पैसों को सूद पर चलाना शुरू कर दिया। एक का डेढ़। क्लर्को की बीवियों को पैसे की जरूरत तो हमेशा ही रहती है इसलिए कालोनी में रमा की बड़ी अज्जत थी।"

यद्यपि भोलापन चोपड़ा एक बिल - कलेक्टर थे परन्तु सबको बता रखा था कि डिप्टी-सेल्स-सुपरवाइजर हैं। एक दिन बाबूलाल श्रीवास्तव उनके ऑफिस पहुँचे। रोब बताने के लिए चोपड़ा जी उन्हें 'क्वालिटी' होटल में ले गये। खाने का बिल सत्तासी रूप्ये सोलह पैसे बना परन्तु बिल वसूलकर लौटे थे इसलिए जेब में सौ-सौ के नोटों की गड्डी थी। उन्होने बिल अदा किया। "क्लर्क श्री बाबूलाल श्रीवास्तव ने सौ-सौ के इतने नोट एक साथ नहीं देखे थे। और जब चोपड़ाजी ने वेटर को पाँच रूपये चैरासी पैसा टीप छोड़ा तो बाबूलाल जी बेहोश होते-होते बचे। तिरानवे रूपये खर्च तो हो गये पर चोपड़ा दम्पति की कॉलोनी में धौंस बैठ गई।" इस प्रसंग से उपन्यासकार ने पैसो की झूठी शान पर प्रतिष्ठा प्राप्त करने की मध्यवर्गीय मानसीकता की ओर संकेत किया है।

मनुष्य की मलभूत तीन आवश्यकताएँ है- रोटी, कपड़ा और मकान। बम्बई जैसे महानगरी में रोटी और कपड़ा जैसे-जैसे जुटाया जा सकता है। सूखी और बासी रोटी तथा फटे वस्त्रों से निर्वाह किया जा सकता है परन्तु रहने के लिए मकान नहीं मिलता। अतः यह कटु सत्य है कि महानगरों में मध्य एवं निम्नवर्गीय व्यक्तियों के लिए मकान बनाना एक ख्वाब बनकर रह जाता है और वे झुग्गी-झोपड़ियों एवं फुटपात पर अपना जीवन बिताने के लिए विवस हो जानते हैं। इस महानगर में दुबई से कई-कई वस्तुएँ आयात होती हैं और उल्हासनगर में नकली वस्तुएँ आयात होती हैं और उल्हासनगर में नकली वस्तुएँ निर्यात होती है। परन्तु मकान की समस्याओं का कोई हल नहीं है। डॉ. राही इस समस्या पर व्यंग्य करते हैं- "यह तो पता नहीं कि बम्बई में ढुंढे से भगवान मिलता है या नहीं परन्तु मकान हरगिज नहीं कि बम्बई हल नहीं है। डॉ. राही इस समस्या पर व्यंग्य करते हैं- "यह तो पता नहीं कि बम्बई में ढुढे से भगवान मिलता है या नहीं परन्तु मकान हरगिज नहीं मिलता। कारण शायद यह है कि फ्लैट, दुबई या आबुधाबी से स्मगल नहीं किये जा सकते और उल्हासनगर में नकली मकान बनानेवाली कोई फैक्टरी नहीं खुली है।"

'कटरा भी आर्जू' में आर्थिक संवेदना यत्र-तत्र अन्तर्निहित है। आसाराम काँग्रेस सरकार पूँजीपतियों का विरोधी है और उसकी मान्यता है कि काँग्रेस सरकार पूँजीवतियों कि दलाल है इसलिए व पूँजीपतियों के हित का सदैव ध्यान रखती है और जनसाधारण का शोषण करती है- "सरकार चाहे नेहरू की हो, चाहे लाल बहादुर की,चाहे मिसेज गाँधी की-काँग्रेस सरकार, पूँतीवाद की दलाल और जनता की दुश्मन है। बजट चाहे मुराजी बनाये,चाहे सुब्रमनियम -काँग्रेस सरकार का

www.ignited.in

मददगार है।" विवेच्य-उपन्यास का आशाराम, मजदूरों के आर्थिक अभावों से प्रेरित होकर बाबू शंकर पाण्डेय जो कि सांसद हैं, के नेशनल गैरेज में हड़ताल, मजदूरी, महंगाई भत्ता और बोनस पर की जाती है। गैरेज में काम करने वाले मजदूर स्वप्नवादी हैं। उनको लगता है कि उनके दुःखों, उनकी भूख और उनकी जरूरतों के लिए कोई टोटका निकल जायेगा और मिल मालिक मुस्कुराते हुए उनकी मजदूरी, महंगाई भता, बढ़ा देगें और उन्हें बोनस भी मिल जाएगा। शम्सूमियाँ यह सोचने लगे। देशराज सोचता है कि हाऊस फंड में चार सौ अस्सी की कमी रह गई है। अतएव पैसा मिलते ही वह जमीन लेकर घर का काम शुरू कर देगा, ताकि उसे फिर बिल्लो से शादी करने में कोई रूकावट नहीं आएगी। मुरली एक ट्रांजिस्टर खरीदने की योजना बना रहा था। कहने का तात्पर्य यह है कि बोनस मिलने पर मजदर अपनी आर्जूओं को पूण करने के स्वप्न देख रहे थे।

जब इतवारी बाबा को यह पता चलता है कि बिल्लो घर बनाने का सोच रही है तब वे बढ़ती हुई महंगाई को ध्यान में रखते हुए उसे समझाते हैं- "अरे ई घर-वर का चक्कर छोड़ बेटा! उ जमाना सस्ती का रहा जब साहजहाँ बादसाह ने आगरे में ताजमहल खड़ा कर दिया रहा। ई जमाना और है। पहले जेतना खरच शादी -बियाह में होता रहा, आज ओसे दूना- तिनगुना खरच क्रिया-कर्म में हो जाए है।" देश में दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई महंगाई ने निम्न एवं एवं मध्य-वर्ग के लोगों की कमर ही तोड़ दी है जिसके परिणाम स्वरूप उच्च-वर्ग के लोगों की कमर ही तोड़ दी है जिसके परिणाम स्वरूप उच्च-वर्ग के लोगों के समक्ष अपने आप को वे पंगु समझने लगे हैं। एक ओर जहाँ अमीर आज भी महंगाई में काला बाजारी और भ्रष्टाचार का सहारा लेकर जिवन में गुलछर्रे उड़ा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर गरीब वर्ग महंगाई की मार से रो रहे हैं। उसका पूरा जीवन आर्थिक अभाव में व्यतीत होता है। बिल्लो की सोच भी इसी प्रकार की है। उसका हिसाब यह है। हिसाब यह है कि बच्चे रोज चार आने का लेमचूस खा जाते यदि यह बंद कर दिया जाय तो महिने में साढे सात रूपया बच सकता है। तब इतवारी बाबा बढ़ती हुई महेगाई और उसके फलस्वरूप लोगों के स्वभाव में आये बदलाव की ओर संकेत करते हैं- "अरे बेटा, साढे सात रूप्ये की आज हैसियत का ? हमारे लड़कपरन में पाँच रूपया में चार परानी का पूरा घर चल जाता रहा इज्जत से और मजें में। आज साढ़े सात रूपये में एक दिन ना चल सकता।रूप्ये तो अब बस नाम का ही रह गया हैं।जेब जितनी जियादा होती जा रही, पैयसा कम होता जा रहा। पहिले लोग हमारी तरह आके बिक देते रहे। अब हमें देख कर पटरी बदल ले हैं। बहुत से लोगन से तो भीक माँगना छोड़ दिया है, केह मारे कि हस्मैं उनके घर का हाल मालूम हैं।" इस प्रसंग में महंगाई के कहर से टूटते मध्यवर्गीय जीवन के प्रति उपन्यासकार की संवेदना व्यक्त हुई है। 'कटरा बी आर्जू' में इतवारी बाबा भीख माँगते हैं। वे भीख माँगकर ही गुजारा करते हैं। उनके बैंक में बारह हजार तीन सौ सताईस रूपया चैबीस पैसा नगद जमा है। उन्होने अपने वसीयतनामा में लिखा कि "ऊ जो बारह हजार तीन सौ है ओमे से हजार रूपया फकीर को बाटें के वास्ते है। बाकी रूपया हम तोरी-स्त्रीमती गाँधी के नाम कर दिया है कि उनके जमाने में हमरे पैसे वालन की बड़ी तरक्की भई है। लोग कहते हैं कि देस में भीख मागें वालन की आबादी बहुत बढ़ी है।" वे भीख माँगने के धंधे से कुछ दिनों के लिए छुट्टी ले लेते हैं। और अपनी जगह को चार रूपये रोज पर दूसरे भिखारी को दे देते हैं। जब बिल्लो यह शंका उपस्थित करती है कि यदि वह तुम्हें चार रूपये देगा तो उसे क्या मिलेगा? तब इतवारी बाबा भीख माँगने के व्यवासाय का अनुभव बताते हैं कि इलाहाबाद जैसे शहर में अच्छा फकीर तीस-चालीस रूपये राज कमा सकता है। क इलाबाद जैसे शहर में अच्छा फकीर तीस-चालीस रूपये रोज कमा सकता है। अतः भारत जैसे गरीब देश में भीख माँगकर जीविका चलाना सहज और सुलभ तथा लाभदायक तरीका है जिसका लाभ हजारों- हजार गरीब उठा रहे हैं।

डॉ. राही ने भारत की गरीबी के साथ पाक्स्तिान की गरीबी का भी वर्णन किया है। शम्सूँ कियाँ को लगता है कि अब्दुल हक पाकिस्तान में ऐश कर रहा है। परन्तु वहाँ की यथार्थ स्थिति यह है कि -"पाकिस्तान में यही तो एक खास बात है। जिसकी खबर आती है, यही आती है कि वह वहाँ ऐश कर रहा है कि दो हजार से कम की तनख्वाह नहीं, कि वहाँ की नदियों में पानी की जगह पैसा बहता है - अब्दुल हक के बारे में भी उन्होने यही सुना था। जबकि हकीकत यह थी कि अब्दुल उस मामलिकते इसलामिया यानी पाकिस्तान में उसी तरह भूखा था जिस तरह शम्सूँ मियाँ भूखे थे।"

असंतोष के दिन भी महंगाई की यही स्थिति का चित्रण है। महंगाई में आटा, अरहर की दालं, डालडा, चावल, शक्कर, गोश्त सभी के भाव बताते हुए उपन्यासकार ने जर्री कलम के माध्यम से लिखा है-"हद तो यह है कि पिछले बरस अम्माँ के कफन-दफन पर सात सौ उठ गये, जबकि दस बरस पहले अब्बा के कफन-दफन पर सवा तीन सौ उठे थे ।जिया जा नहीं रहा है और मरने की हिम्मत नहीं पड़ रही है। तो फिर आदमी करे क्या ?

देश में होने वाले साम्प्रदायिक दंगे आर्थिक व्यवस्था में बदलाव लाते हैं। बाजार में वस्तुओं की कीमते बढ़ जाती हैं तो और दंगाग्रस्त क्षेत्र से लोग शांत क्षेत्र में पहुँचने हैं या उन

www.ignited.in

स्थानों पर पहुँचते है या उन स्थानों पर पहुँचाते हैं, जहाँ के वे मूल निवासी हैं-"बम्बई आगरा रोड बंद हो गई। क्योंकि, चन्द दिनों के लिए शायद भिवण्डी, ठाने, कल्याण और बम्बई के कुछ हिस्से हिन्दुस्तान से निकलकर मराठवाड़े में चले गये।सब्जी, तरकारी, फल, दूध अण्डे की गाड़ियाँ हिन्दुस्तान और मराठवाडे की सीमा पर रूक गयीं-दाम बढ़ गये-और बहुत सारी जमीन जिसे झोपड़पट्टियों ने घेर रखा था खाली हो गयी ताकि उन पर ऊँची-ऊँची महगे फ्लैटोंवाली बिल्डिंगे खड़ी हो सकें।"

सन्दर्भः

आधा गाँव- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 70

आधा गाँव- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 145

आधा गाँव- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 289

आधा गाँव- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 329

आधा गाँव-डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 301

आधा गाँव- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 345

आधा गाँव- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 54

हिम्मत जौनपुरी- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 57

हिम्मत जौनपुरी- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 103

हिम्मत जौनपुरी- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 110

ओस की बूँद- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 43

ओस की बूँद- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 43

दिल एक सादा कागज- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 37

दिल एक सादा कागज- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 53

दिल एक सादा कागज- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 64

दिल एक सादा कागज- डॉ. राही मासूम रजा -पृ॰ 68

टोपी शुक्ला- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 14

टोपी शुक्ला- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 156

टोपी शुक्ला- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 87

सीन७५- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 25

सीन७५- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 27

सीन७५- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 71

कटरा बी आर्जू- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 15,16

कटरा बी आर्जू- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰

कटरा बी आर्जू- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 33,34

कटरा बी आर्जू- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 150,151

कटरा बी आर्जू- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 47

असंतोष के दिन- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 50

असंतोष के दिन- डॉ. राही मासूम रजा-पृ॰ 63

Corresponding Author

Hari Om*

M.Phil in Hindi (UGC Net) VPO - Madina, Rohtak, Haryana

hariom788@gmail.com

www.ignited.in